

# कृषक ज्योति



भाग -1, अंक 2 जनवरी-2026

त्रैमासिक पत्रिका



# संपादक - मंडल

## डॉ. राजेंद्र प्रसाद मुख्य संपादक

editorinchief@krishakjyoti.in  
प्रोफेसर, उद्यान विज्ञान विभाग,  
कुलभास्कर आश्रम PG कॉलेज  
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

## सौम्या तिवारी संपादक

editor@krishakjyoti.in  
प्रबंधन अध्ययन विद्याशाखा उत्तर प्रदेश  
राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय,  
प्रयागराज

## डॉ. अनुराग रजनीकांत तायडे संपादक

editor@krishakjyoti.in  
सहायक प्रोफेसर कीट विज्ञान विभाग,  
शुआट्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

## डॉ. अमित कुमार संपादक

editor@krishakjyoti.in  
सहायक प्रोफेसर कृषि अर्थशास्त्र विभाग,  
SHUATS, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

## निखिल तिवारी श्रीदत्त सह-संपादक

coeditor@krishakjyoti.in  
टीचिंग एसोसिएट कृषि विस्तार एवं संचार  
विभाग, शुआट्स,  
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश



**प्रकाशक**  
**डॉ. राजेन्द्र प्रसाद**

**पत्रिका का प्रकार -** हिंदी, त्रैमासिक पत्रिका, कृषि पत्रिका

**पंजीकृत कार्यालय -** 4/4सी, म्योर रोड, इलाहाबाद, इलाहाबाद,  
उत्तर प्रदेश -211002

**Website -** [www.krishakjyoti.in](http://www.krishakjyoti.in)

**E-mail -** [editorinchief@krishakjyoti.in](mailto:editorinchief@krishakjyoti.in)

**Contact -** 9450681433



# सर्दियों में अमरूद की खेती के लिए सामयिक प्रबंधन

राम राज यादव एवं डॉ लवकुश पांडेय

शोध छात्र<sup>1</sup>, सहायक प्राध्यापक उद्यान विज्ञान विभाग<sup>2</sup>

**अमरूद** (*Psidium guajava* L.) भारत का एक प्रमुख उष्णकटिबंधीय फल है, जिसे अपनी उच्च पौष्टिकता, स्वाद और औषधीय गुणों के कारण “गरीबों का सेब” भी कहा जाता है। बाजार में निरंतर मांग के



कारण यह उत्तर भारत के किसानों के लिए एक अत्यंत लाभकारी फसल सिद्ध हो रही है। यद्यपि अमरूद की खेती वर्षभर की जा सकती है, किंतु सर्दियों का मौसम (अक्टूबर से फरवरी) फलों की गुणवत्ता, मिठास और बेहतर बाजार मूल्य के लिए सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। हालाँकि, इस अवधि में ठंड, पाला, रोगों की संवेदनशीलता तथा जल प्रबंधन जैसी चुनौतियाँ सामने आती हैं, जो उपज और गुणवत्ता दोनों को प्रभावित कर सकती हैं। इसलिए सर्दियों में अमरूद की वैज्ञानिक देखभाल और समन्वित प्रबंधन अत्यंत आवश्यक है। नीचे दिए गए बिंदुओं का सावधानीपूर्वक

पालन करके किसान अपनी पैदावार और आय दोनों में उल्लेखनीय वृद्धि कर सकते हैं।

## उचित किस्मों का चयन

सर्दियों की शुरुआत से पहले ऐसी किस्मों का चयन करें जो ठंडे तापमान को सहन कर सकें। उत्तर भारत में लखनऊ-49, इलाहाबाद सफ़ेदा, सरदार, श्वेता और ललित जैसी किस्में अत्यधिक लोकप्रिय हैं।

इन किस्मों में न केवल ठंड सहनशीलता होती है, बल्कि ये बड़े आकार के, अधिक मीठे और आकर्षक फल देती हैं। ठंड-प्रतिरोधी किस्मों के चयन से पौधों की वृद्धि, रोग-प्रतिरोधक क्षमता और कुल उत्पादकता में स्पष्ट सुधार होता है।

## पौधों की कटाई एवं छंटाई

कटाई-छंटाई अमरूद प्रबंधन का अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है। सर्दियों की शुरुआत में हल्की छंटाई कर मृत, रोगग्रस्त तथा आपस में उलझी शाखाओं को हटा देना चाहिए।

इससे पौधों में वायु परिसंचरण और सूर्य प्रकाश का प्रवेश बेहतर होता है, नई फलदार टहनियों का विकास होता है तथा संतुलित छत्राकार (canopy) संरचना बनती है। सुव्यवस्थित पौधे न केवल अधिक फल देते हैं, बल्कि फलों का रंग, आकार और स्वाद भी बेहतर होता है।

## मृदा प्रबंधन एवं पोषण सुधार

मिट्टी का स्वास्थ्य सीधे उत्पादन और गुणवत्ता को प्रभावित करता है। सर्दियों से पूर्व मिट्टी की जाँच कर pH एवं पोषक तत्वों का विश्लेषण अवश्य करें।

मिट्टी को सड़ी हुई गोबर की खाद, कम्पोस्ट या वर्मी-कम्पोस्ट से समृद्ध करें। ये कार्बनिक पदार्थ मिट्टी की संरचना सुधारते हैं और जैविक क्रियाशीलता बढ़ाते हैं।

मल्लिंग (सूखे पत्ते, पुआल या घास की परत) सर्दियों में अत्यंत उपयोगी होती है। इससे नमी संरक्षण, खरपतवार नियंत्रण तथा तापमान के उतार-चढ़ाव से जड़ों की सुरक्षा होती है।

## सिंचाई प्रबंधन

सर्दियों में वाष्पीकरण दर कम होने के कारण पानी की आवश्यकता सीमित रहती है, परंतु लंबी शुष्क अवधि में नमी की कमी से फल छोटे और कम मीठे हो सकते हैं।

ड्रिप या स्प्रिंकलर सिंचाई सर्वोत्तम रहती है, क्योंकि पानी सीधे जड़ क्षेत्र तक पहुँचता है और जल की बचत होती है। ध्यान रखें कि जलभराव न हो, क्योंकि ठंड में अधिक नमी से जड़ सड़न (Root Rot) का खतरा बढ़ जाता है। मिट्टी नम रहे, पर गीली नहीं-यह सबसे महत्वपूर्ण है।

## खाद एवं उर्वरक प्रबंधन

सर्दियों में पौधों की वृद्धि धीमी रहती है, इसलिए पोषक तत्वों की आपूर्ति संतुलित मात्रा में करें। प्रति पौधा प्रतिवर्ष -:

- ❖ 8-10 किग्रा सड़ी गोबर की खाद
- ❖ 250 ग्राम नाइट्रोजन

- ❖ 200 ग्राम फास्फोरस
- ❖ 200 ग्राम पोटेश
- ❖ उर्वरकों को दो भागों में दें-आधा भाग सर्दियों की शुरुआत से पहले तथा शेष भाग फूल आने के समय। नीमखली, बोन-मील और वर्मी-कम्पोस्ट जैसे जैविक विकल्प मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने में सहायक होते हैं।

## कीट एवं रोग प्रबंधन

सर्दियों में अमरूद पर फल मक्खी, मीलीबग, एफिड्स और स्केल कीट का प्रकोप देखा जाता है। साथ ही एन्थ्रेक्रोज और पत्ती धब्बा जैसी बीमारियाँ गुणवत्ता को प्रभावित करती हैं।

## प्रबंधन उपाय

- गिरे हुए फलों व सूखी पत्तियों को एकत्र कर नष्ट करें।
- नीम आधारित कीटनाशकों तथा ट्राइकोडर्मा युक्त जैव-फफूंदनाशकों का प्रयोग करें।
- फेरोमोन ट्रैप और येलो स्टिकी ट्रैप (पीला ट्रैप) लगाएँ।
- एकीकृत कीट प्रबंधन (IPM) अपनाएँ, जिससे रासायनिक दवाओं पर निर्भरता कम हो।

## ठंड और पाला से सुरक्षा

दिसंबर-जनवरी में कुछ क्षेत्रों में तापमान 4°C से नीचे चला जाता है, जिससे पौधों को पाले से नुकसान हो सकता है।

## सुरक्षा उपाय:

- युवा पौधों को घास, बोरी या पॉलीथिन शीट से ढकें।
- पौधों के चारों ओर 20-25 सेमी ऊँचा मेड़ (Earthing-up) बनाएँ।

- खेत की मेड़ पर पवनरोधी पौधे जैसे अरहर, बबूल या शीशम लगाएँ।
- अत्यधिक ठंड में शाम को हल्की सिंचाई करें, इससे पाले का प्रभाव कम होता है।
- तुड़ाई के उपरांत प्रबंधन
- फल पूर्ण विकसित हों, पर अत्यधिक मुलायम न हों- तभी कटाई करें। फलों को सावधानी से तोड़ें ताकि डंठल सुरक्षित रहे।
- कटाई के बाद फलों को धोकर ग्रेडिंग करें और वेंटिलेटेड प्लास्टिक क्रेट या बाँस की टोकरियों में रखें। 8-10°C तापमान और 85-90% आर्द्रता पर भंडारण से शेल्फ-लाइफ 10-12 दिन तक बढ़ाई जा सकती है।

## **निष्कर्ष**

उत्तर भारत में सर्दियों का मौसम अमरूद की गुणवत्ता और मिठास बढ़ाने का सर्वोत्तम अवसर प्रदान करता है। उचित किस्म चयन, संतुलित पोषण, वैज्ञानिक सिंचाई, जैविक कीट-रोग प्रबंधन, पाले से सुरक्षा तथा सही कटाई-पश्चात प्रबंधन अपनाकर किसान न केवल अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं, बल्कि बाजार में बेहतर मूल्य भी अर्जित कर सकते हैं। इस प्रकार, सर्दियों की अमरूद फसल किसानों के लिए एक आर्थिक वरदान सिद्ध हो सकती है - यदि इसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सावधानीपूर्वक देखभाल के साथ उगाया जाए।